पर्वतों पर.....

हिडिम्बा मंदिर के प्रांगण में सैलानियों का जमावड़ा अधिक नहीं था, संभवतः मुख्य कारण यही रहा होगा, कि पर्यटन का सीजन नहीं था। मार्च-अप्रैल के महीने वैसे भी किसी सद्गृहस्थी के लिए पर्यटन के अवसर प्रदान नहीं करते। एक तो बच्चों की परीक्षाएं, तिस पर मौसम का अच्छा मिजाज, फिर भी जो सैलानी थे, वे प्राकृतिक वातावरण में स्वयं को रमा कर यादों का खजाना अपने साथ ले जाने के लिए प्रयासरत थे। कभी मंदिर के मुख्य द्वार के ईर्द गिर्द खड़े याक की पीठ पर बैठकर फोटो खिंचवाते, कभी हाथ में खरगोश लेकर। खरगोश भी अधिक चपल नहीं, किन्तु सधे सधाए, मालकिन ने जिसके हाथों में पकड़ा दिया, चुपचाप उन्हीं हाथों में सिमट गए, इस बात से अनभिज्ञ कि मालकिन उसी के बूते पर अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिए यह कृत्य कर रही है।

ऐसे में भला पारंपरिक पहाड़ी वेशभूषा में फोटो खिंचवाने के मोह से कैसे अछूता रहा जा सकता है, सो सैलानियों का जमावड़ा सजने धजने के लिए भी दो तीन दुकानों पर लगा था, जहां मात्र दो या तीन मिनिट में ही महिलाओं को ठेठ पहाड़िन दर्शाने की कला को अंजाम दिया जा रहा था। साथ ही विशिष्ट फोटो के लिए कंधे पर बनावटी फूलों की डलिया लटकाई जा रही थी।

पहाड़ हैं तो कमाई का जरिया पर्यटन से अच्छा कुछ नहीं है। इसके अतिरिक्त कमाई का विकल्प भी तो नहीं। कहीं किसी पेड़ के नीचे कोई मूर्ति रखकर प्रचारित कर दिया कि यह घटोत्कच्छ का मंदिर है, कहीं किसी कमरे में कच्ची मिट्टी से लीपकर कोई मूर्ति रख दी तथा प्रचारित कर दिया कि किसी कुलगुरु का आश्रम है। प्रमाण मांगता भी कौन है, कि सदियों पुरानी किसी कहानी के नायक या खलनायक के अवशेष कहाँ कहाँ हैं और हैं भी, तो उनकी प्रमाणिकता क्या है, किन्तु पर्यटकों को घूमने के लिए कोई तो बिन्दु चाहिए ही।

वैशाली साथ थी। बार-बार शॉपिंग की रट लगाए थी, आखिर उसे भी अपने नाते-रिश्तेदारों व परिचितों में यह सिद्ध करना था कि वह प्राकृतिक विलक्षणताओं से युक्त कुल्लू घाटी में घूम कर आई है। मनाली में पत्थरों का सीना चीरकर निनाद करती हुई नदी का नयनाभिराम दृश्य देखकर आई है तथा रोहतांग की बर्फ से ढकी चादर में उथल पुथल मचाकर लौटी है। मैंने उसे समझाया भी- वैशाली... जो उत्पाद यहां निर्मित होता है, वही उत्पाद लेने का यहां से लाभ है, अन्यथा सभी उत्पादों के भाव मैदानी भागों से दोगुने, तिगुने ही हैं। किन्तु शॉपिंग और महिलाएं जैसे दोनों शब्द एक दूसरे के पर्याय हों। बहरहाल माल रोड कहे जाने वाले मार्ग के इर्द गिर्द बिकी का सामान सजना शुरू हो गया, लेडीज शॉल, कम्बल, गर्म नक्काशीदार डिजाइन वाले सलवार सूट यानी महिलाओं की पहली पसन्द, जिसे उपहार में भी दिया जा सकता है। दुकानदार महिलाओं को आकृष्ट करने के लिए हर प्रकार की वैरायटी सजाए हुए थे, बस कलाकारी मोलभाव करके अपना खासा मुनाफा कमाने पर टिकी थी।

चीड़ के गगनचुम्बी वृक्षों के बीच चहलकदमी करते हुए प्रकृति के प्रति नतमस्तक होना नई बात नहीं थी। निःसन्देह प्रकृति का आनंद गगनचुम्बी इमारतों से घिरे कंक्रीट के जंगल में भला कहां संभव होता है, जहां बक्सेनुमा घरों में व्यवस्थित होकर बच्चे प्रकृति का प्रारम्भिक व अनिवार्य ज्ञान भी अर्जित नहीं कर पाते। सूरज और चंदा भी जहां किताबों के पन्नों में कैद होकर रह गए हों, वहां प्रकृति की बात ही बेमानी हो जाती है। सो चीड़ के हरे भरे वृक्षों को आँखों में भरकर प्राकृतिक दृश्य को आँखों में भरने के लिए मैं आतुर था।

वैशाली का मन प्राकृतिक सौन्दर्य निहारने में नहीं था। वह बार-बार शॉपिंग करने के लिए बाजार का रुख करना चाह रही थी। अन्ततः खीझकर उसने कह ही दिया- आप होटल में जाकर विश्राम कीजिए, मैं बिना शॉपिंग किए मनाली छोड़ने वाली नहीं। आखिर मेरी भी इच्छा है कि अपने सगे संबंधियों के लिए उपहार खरीदूं, नहीं तो किसी को पता कैसे चलेगा, कि हम लोग मनाली घूमकर लौटे हैं। पत्नी से समझौता करने में ही भलाई मानकर मैंने वैशाली के सम्मुख समर्पण कर दिया।

होटल के कक्ष में मैंने चारों ओर नजर घुमाई, तो पाया, चीड़ के लम्बे चौड़े वृक्षों की लकड़ी का करीने से प्रयोग किया गया है। फर्श से लेकर दीवारों तक लकड़ी का प्रयोग यह जताने में समर्थ था, कि प्राकृतिक सम्पदा का भरपूर एवं उदेश्यपरक प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है। यदि इस प्रकार के संसाधनों का प्रयोग मैदानी क्षेत्रों में किया जाय, तो कई गुना व्यय में भी इस प्रकार की सुविधाएं जुटाना संभव नहीं होगा।

वैशाली अभी बाजार से नहीं लौटी है। मिसेज वर्मा भी उसके साथ है, अच्छा मोलभाव कर लेती है। मिसेज वर्मा की पारखी नजर और शॉपिंग करने की कला को देखकर अनेक अवसरों पर वैशाली ने दांतों तले अंगुली दबाई है तथा शॉपिंग में अविश्वसनीय बचत भी की है। मुझे मिसेज वर्मा के होते हुए पूरा यकीन है कि मनाली में भी वैशाली अपेक्षाकृत सही शॉपिंग करके लौटेगी।

कक्ष में अकेलापन मुझे अखर रहा है, सो टी.वी. ऑन करके न्यूज चैनल बदल रहा हूं। पसंदीदा न्यूज चैनल पर विज्ञापन आ रहे हैं सो चैनल बदलता हूं। ऐसा लगता है कि विज्ञापनदाताओं को लाभ पहुंचाने के लिए सभी न्यूज चैनल्स ने समय का विभाजन सामूहिक निर्णय लेकर किया है, कि जिस समय किसी खास चैनल में विज्ञापन दिखाए जाएंगे, उसी कालांश में अन्य चैनल भी विज्ञापन ही दिखाएंगे।बोरियत हो रही है। सो बॉलकनी में आकर खड़ा हो जाता हूं। एक दूसरे की बांहों में बांहें डालकर चहल कदमी करते नवयुगलों को देखकर अतीत स्मरण हो आता है, कि जब हम नवयुगल थे, तब इतना खुलापन नहीं था। हर समय लाज की पोटली सी स्वयं में ही सिमटी रहती थी वैशाली। कभी पर्वतीय क्षेत्र में घूमने की इच्छा भी व्यक्त नहीं की।

वैसे भी पारिवारिक संयुक्त व्यवसाय के चलते बिना अनुमति पत्नी को कहीं घुमाने ले जाने का प्रस्ताव भी माताजी के सम्मुख रखना बैरया के छत्ते में हाथ डालने से कम न था। तनिक सा कहीं घूमने का जिक्र किया नहीं, कि दायित्वों का भान कराना शुरू कर देती थी, कहती थी- हमारा भी मन करता है घूमने फिरने का, मगर घर का ख्याल आता है। कहीं भी घूम लो, घर और अपने शहर जैसी बात नहीं होती। एक की जगह चार लगते हैं। कमाओ और घर गृहस्थी में लगे रहो, बस, यही घर में समृद्धि लाएगा। कल के लिए भी कुछ जोड़कर रखना जरूरी है, न जाने कब कौन सी विपत्ति आ जाए। ऐसे में घूमने की भला कोई कैसे सोच सकता था।अब माताजी नहीं है। उनके परलोक सिधारने के उपरांत उनकी विरासत वैशाली के हिस्से में ही आई है। किन्तु विचारों में माताजी से बिल्कुल उलट। उदारमना के साथ-साथ फिजूलखर्ची में भी माहिर। बस एक बार किसी भी उत्पाद पर मन आ जाय, जब तक वह उत्पाद घर में नहीं आ जाता, तब तक चैन नहीं लेती। उत्पादों का निम्न व मध्यम आकार तो बिल्कुल पसंद नहीं। टी.वी., फ्रिज, पानी का टैंक, घर में जो भी उत्पाद आए, वह फुल साईज का ही होना चाहिए। भले ही प्रयोग में पूरी तरह लाया न जा सके। क्या करें, संयुक्त परिवार में रहकर उपयोग करना अधिक सीखा है। कमी कभी देखी नहीं, सो छोटी सी कमी भी वैशाली को खूब अखरती है।

वैशाली लौट आई है। दोनों हाथों में पॉलीथीन बैग है, ठसाठस भरे हुए। मैंने पूछा- क्या मुहल्ले भर के लिए उपहार इकट्ठे कर लाई हो? वह मुस्कराई और बोली- चिन्ता मत कीजिए, सब बजट में ही है। तुमसे मैंने शॉपिंग के लिए जितने पैसे लिए हैं, उन्हीं में निपट गई।

मेरे चेहरे पर भी सन्तोष का भाव उभर आया। भीतर ही भीतर हंसा- मूर्ख को जितना कटना था, वह कट गया। वैसे भी गृहस्थ को यदि सुचारू रूप से गतिशील रखना है, तो अपनी जेब कटवाने में पीछे मत रहो। भले ही भीतर से सौ-सौ आंसू भीगते रहो, मगर चेहरे पर मुस्कराहट बरकरार रहनी चाहिए। झुंझला सकते हो मगर स्वयं पर ही, किसी भी पर्यटन स्थल पर जाने से पहले मन पक्का करना भी जरूरी है, कि घुमना है तो शाही अंदाज में, कोई मोलभाव नहीं, कोई कंजूसी नहीं, एक ही तो जगह ऐसी होती है, जहां पत्नी की नजरों में स्वयं को ऊंचा दर्शाये रखना अनिवार्य होता है।पत्नी का मन था, कि होटल में एक दो रातें और गुजार ली जायं। भीषण गर्मी से थोड़ी निजात तो मिल रही है, मगर जेब मुझे तीन रातें गुजारने के बाद होटल में ठहरने की अनुमति नहीं दे रही थी। मैं महसूस कर रहा था, कि होटल में कमरे का जितना किराया एक दिन का चुका रहा हूं, उतना किराया तो मैं महीने भर में भी अपने मकान मालिक के हाथ पर नहीं रखता। मैंने वैशाली को समझा भी दिया तथा आश्वासन भी दिया कि भविष्य में ऑफ सीजन के समय किसी दूसरे पर्वतीय स्थल पर सप्ताह भर के लिए अवश्य चलेंगे।वैशाली से अधिक भला मेरी मजबूरी कौन समझ सकता था। सो वह बोली- ठीक है, मैं मानती हूं कि जेब का वजन कम हो रहा है, किन्तु मेरा प्रश्न अपनी जगह यथावत है कि जेब का वजन बढ़ाया क्यों जाता है? यदि हम अपने दैहिक सुखों के लिए धन खर्च नहीं कर सकते, तो धन कमाने का औचित्य ही क्या है?

वैशाली की बात में दम था, उसका तर्क निःसन्देह अकाट्य था, किन्तु मेरे भीतर के संस्कारों से निर्मित मेरी प्रवृत्ति किसी भी स्थिति में केवल भौतिक सुखों के लिए धन खर्च करने पर सहमत नहीं थी, फिर भी मुझे वैशाली की हाँ में हां मिलाना ही श्रेयस्कर लगा, क्योंकि मुझे यह लग रहा था कि यदि वैशाली के तर्क के प्रति असहमति व्यक्त की, तो अवश्य ही मुझे कंजूस का खिताब मिलने में देर न लगेगी।

- डॉ. सुधाकर आशावादी

दो नम्बर की कमाई

क्यों तू इतना खुश है मानुष.
कौन सा ऐसा घर जाएगा।
दो नम्बर की कमाई भरपूर,
सोच-सोचकर मर जाएगा।।
●●●●
सच है पैसा बिन संसारी
इस युग में नही चल सकता है।
धन के बिना पहचान नहीं है,
खाली पेट नहीं पल सकता है।
जितनी जरुरत है तुझको,
उतने ही को चर पाएगा।
दो नम्बर की कमाई.....।।
●●●●
तनखा जितना मिल जाता है,
उस पर क्यों विश्वास नहीं है।
चार पांच का पालन पोषण,
परिवार रों कुछ खास नहीं है।
दिनभर रिश्वत उहा-पोह में,
तनाव पालकर क्या खाएगा।
दो नम्बर की कमाई.....।।
●●●●
इधर नौकरी उधर दलाली,
कब तक ऐसा चलता रहेगा।
फल फूल धूप दीप से मंदिर,
बचालो प्रभूजी रोते कहेगा।
बाल पक रहा, उमर घट रहा,
एक स्ट्रोक से धर जाएगा।
दो नम्बर की कमाई.....।।
●●●●
जो कुछ तेरे पास रकम है,
कुछ तो उससे पूण्य कमा ले।
जरुरतमंद को खोज खाजकर,
उसके हाथ से सिर सहला ले।
अच्छे घर में पैदा होगा.....
जोगी सत है तर जाएगा।
दो नम्बर की कमाई.....।।
●●●●
क्यों तू इतना खुश है मालुष,
कौन सा ऐसा घर जाएगा।
दो नम्बर की कमाई भरपूर,
सोच- सोचकर मर जाएगा।।

जोगेन्द्र महापात्र "जोगी"
जगदलपुर

सेटेलाइट मारने का प्रूफ दिखाओ

व्यंग्य

भारत ने 'शक्ति मिशन' के तहत एक सेटेलाइट को मात्र तीन मिनट में उड़ा दिया। आइए इस पर विभिन्न राजनैतिक लोगों की प्रतिक्रियाएं जानते हैं....

तो आइए हम आपको ले चलते हैं नवाबों और कबाबों के शहर लखनऊ में... तो अक्लेश जी इस शक्ति मिशन को लेकर आपका क्या कहना है?

अजी कहना क्या है? हमका तो यह लग रहा है कि सत्तापक्ष अपने मुँह मियां मिट्ठू बन रहा है। अब देखिए न, सेटेलाइट मार गिराने से पहले ही चौकीदार जी ने ऐलान कर दिया कि पौने बारह बजे धमाका करूँगा। पहले गिरा ही लेते, तब तो कहत। वैसे जब हमारी सरकार थी तब हमने कई सेटेलाइट गिराए थे मगर हमने कभी जिक्र नहीं किया। हमरा जोर इस बात पर रहा कि विकास हो और हमने अपने प्रदेश का विकास हर कीमत पर किया। इतना विकास किया कि हमें अपने सरकारी आवास की टॉटियां तक बेचनी पड़ी। वैसे मोई जी ने अच्छा नहीं किया उस सेटेलाइट को गिरा कर। यह वही सेटेलाइट था जिसकी मदद से हमने आजम खां जी की भैंसें खोजी थी। अब बताइए ये भी कोई बात है कि इतने बढ़िया चलते चुलाते सेटेलाइट को मार गिराया। हम इस मारा मारी का भारी विरोध करते हैं।

अक्लेश जी, वैसे आपसे अपने राज में दस गुंडों तक को तो मार गिराया नहीं गया और आप दावा कर रहे हैं कई सेटेलाइट मार गिराने का। चलो फिर भी बहुत बहुत धन्यवाद।

तो अब जानते हैं कि बुआ जी का इस बारे में क्या कहना है।

देखिये.... ये सब मनुवादियों की चाल है। एक दलित सेटेलाइट को इस तरह मार गिराना किसी को भी शोभा नहीं देता। आसमान में इतने सेटेलाइट घूम रहे हैं मगर मोदी जी ने चुना भी तो दलित सेटेलाइट। ये मनुवादी हमेशा यही करते हैं। कमजोर को नष्ट करने में लगे हुए हैं। हम यह अत्याचार नहीं होने देंगे। हम सभी दलित सेटेलाइटों की बेहतरी के लिए दलित सेटेलाइट आयोग बनाने की मांग करते हैं ताकि भविष्य में कोई मनुवादी इस तरह किसी दलित सेटेलाइट को मार न गिराए।

मगर बुआ जी हमने तो आज तक सुना नहीं कि सेटेलाइट की भी कोई जाति होती है?

होती है जी, बिलकुल होती है। किसने कहा कि सेटेलाइट दलित नहीं हो सकता। आपने सुना नहीं क्या कि उस सेटेलाइट को निचले आर्बिट में रखा गया था। इन मनुवादियों ने सभी सवर्ण सेटेलाइटों की ऊपरी कक्षा में रखा हुआ है और दलित सेटेलाइटों को नीचे के आर्बिट में। ये मनुवादी कभी चाहते ही नहीं कि निचले आर्बिट का सेटेलाइट ऊपरी आर्बिट में कभी जाए। ये अन्याय है और हम इस अन्याय के खिलाफ मानवाधिकार आयोग तक जाएंगे। हम इन मनुवादी ताकतों को मनमानी करने न देंगे।

गजब भाई गजब। ये तो सेटेलाइट भी दलित निकला। वैसे धन्यवाद बुआ जी आपका कीमती समय हमें देने के लिए।

तेजप्रसाद भाई साहब आप कब पधारे? कुछ कहना चाहेंगे इस सेटेलाइट कांड के ऊपर!

बिलकुल कहना चाहेंगे। अरे हमका कोई बुड़बक बताया होता तो हम उस पिछड़े सेटेलाइट की रक्षा का कोई न कोई इंतजाम अवश्य करते। हमारे पूर्वज श्रीकृष्ण भगवान ने सभी गोकुल वासियों की इंद्र भगवान के प्रकोप से रक्षा की थी तो हम भी इस पिछड़े सेटेलाइट को यूँ मरने न देते। ये प्रहार सेटेलाइट पर नहीं हुआ, पिछड़ों पर प्रहार हुआ है। हम इसका घोर निंदा करता हूँ।

धन्यवाद तेजप्रसाद जी। हम आपका इन्टरव्यू थोड़ी देर में लेंगे। अभी योगी जी जा रहे हैं उनकी भी प्रतिक्रिया ले लेते हैं।

योगी जी कल के शक्ति मिशन पर आप क्या कहना चाहेंगे!!!

ये सक्ति मिसन हम बहुत पहले करना चाह रहे थे मगर हमने पहले सोचा कि थोड़ी फुलझड़ियां बालकोट में छुड़ा लें, तब सेटेलाइट के टुकड़े टुकड़े करेंगे। टुकड़े तो अभी हमने बहुत सी चीजों के करने हैं। आप बस देखते रहिए। कल के सक्ति मिशन की सफलता के कारण हमारी सुरक्सा व्यवस्था और भी चाक चौबंद हुई है। अब हमारे पास ऐसी टेक्नोलाजी है कि हम किसी भी पत्थरखान को घर बैठे ठोंक सकते हैं। कल की परिक्सा में खरा उतरना इस बात का द्योतक है कि हमारे वैज्ञानिक बहुत काबिल हैं और हमारे वैज्ञानिकों के दम पर ही हम विश्व की सबसे बड़ी सक्ति बन कर उभरेंगे। और ये अधर्मी लोग क्या समझते हैं कि हमने बस एक सेटेलाइट गिराया है? अभी देखो हम और क्या क्या गिराते हैं। अरे मैं कहता हूँ कि तुम चाहे हजार बार हमारे मंदिरों को गिरा कर उन पर मस्जिद खड़ी करो, हम अपनी लेटेस्ट मिसाइलों से सभी को उड़ाकर मन्दिर वहीं बनाएंगे।

योगी जी ये मंदिर बीच में कहाँ से आ गया!!!!

वैसे आप सही कह रहे हैं। मन्दिर वहीं बनाएंगे। जय श्री राम।

अरे वाह!!! ये संसार के सबसे बड़े थियेटरबाज यहां कबाबों के शहर में कहाँ से आ गए? चलिए इनसे भी शक्ति मिशन के बारे में जानते हैं

अजी शक्ति मिशन विशन कुछ नहीं है जी। ये तो केंद्र सरकार की सोची समझी चाल है जी, चुनावों से ठीक पहले। अजी घूमते फिरते सेटेलाइट को गिराना कोई हँसी खेल है क्या जी? ये मोदी जी झूठ बोल रहे हैं। पहले झूठ बोला कि बालकोट में सर्जिकल स्ट्राइक किया। अजी हमने सबूत मांगे तो एक सबूत ना दिखा पाए आज तक। अब मोदी जी झूठ बोल रहे हैं कि सेटेलाइट गिरा दिया। अजी सब झूठ है कोरा झूठ। ये झूठों की पार्टी और कर भी क्या सकती है। अजी आप ही बताओ अगर सेटेलाइट गिरा होता तो कहीं न कहीं उसका मलबा गिरा होता कि नहीं! अब आप बताओ कहीं मलबा दिखा उस सेटेलाइट का? नहीं दिखा न। अजी हमें तो पता था कि ये जनता का उल्लू बना रहे हैं। ये नहीं चाहते कि चुनाव में इनके अलावा कोई जीते। केंद्र की पूरी कोशिश है कि लोगों को डरा धमकाकर वोट ले लें। अजी ऐसे वोट मिलते हैं कहीं? एक सेटेलाइट गिराकर लोगों को धमकाओगे क्या?? आज फ्री की रेडियो मिला है, फ्री का टेलीविजन। जब दिल करता है मन की बात करने आ जाते हैं। झूठ बोलने की ही हद होती है जी मगर ये तो अंधे हो गए हैं अंधे और सबको अंधा समझते हैं जी। सेटेलाइट मार गिराया सेटेलाइट मार गिराया। दिखाओ सबूत अगर मारा है तो....

राहुल जी राहुल जी अरे आप कहाँ जा रहे हैं। थोड़ा बताएंगे नहीं सेटेलाइट कांड के बारे में?

मगर राहुल जी रुके नहीं। होठों ही होठों में कुछ बुदबुदा रहे थे... कुछ सुन तो ऐसा रहा था जैसे कह रहे हों दुवैल्व वंजा दुवैल्व दुवैल्व दुजा ट्वेंटी फोर...।

- डा. संजीव कुमार वर्मा

लड़कियां बेकसूर होती हैं साहब.....

कहीं पढ़ा था कि लड़की जब तक गुनहगार नहीं होती जब तक वह आरोपी साबित नहीं होती और लड़के तब तक दोषी होते हैं जब तक निर्दोष साबित नहीं हो जाते। पढ़ने में ये लाइनें जितनी गहराई से दिल को छू जा रही हैं उतनी ही मजबूती के साथ यही पंक्तियां हमारी मानसिकता और हमारी व्यवस्था की बखेड़ियां उधेड़ रही हैं क्योंकि हम बात तो करते हैं समानता की, हम बात तो करते है एक हाथ से ताली न बजने की, हम बात तो करते हैं बुद्धिजीवी होने की, हम बात तो करते हैं निष्पक्ष न्याय की पर जब बात आती है अमल में आने की तो भूल जाती है हमारी व्यवस्था, प्राप्त मौलिक अधिकार के अनुच्छेद 14 एवं 15 को क्योंकि लड़के ही कसूरवार होते हैं साहब, लड़कियां तो मासूम होती हैं। अनुच्छेद 14 एवं 15 क्रमशः स्पष्ट बताता है कि विधि के समक्ष समानता एवं धर्म, वंश, जाति, लिंग और जन्म स्थान आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा जो न्यायालय में वाद योग्य भी है लेकिन शायद हमारी समाज, हमारी व्यवस्थाएं दोहरे रास्तों पर कदमताल कर रही हैं जो खुद में ही मजाक बन रहा है।

लड़के ही कसूरवार होते हैं, लड़कियां तो भोली होती हैं यह बात जितनी हास्यप्रद है इसका प्रमाण उतना ही सटीक। तभी तो अक्सर समाचार पत्रों में छपने वाली खबरें खुद व खुद इसकी सच्चाई बयां कर देती हैं। आजतक किसी भी समाचार पत्र-पत्रिकाओं में यह पढ़ने को नहीं मिला कि कोई लड़की मासूम से लड़के को बहला फुसलाकर भगा ले गई लेकिन यह खबर बड़ी आसानी से सुनने को मिल जाएगी कि युवक मासूम युवती को लेकर नौ दो ग्यारह।

सुना तो था कि पांचों अंगुलियां एक सी नहीं होती तो फिर ये कैसे हो सकता है कि सामने आई इतनी घटनाओं में कोई लड़का मासूम न हो। क्या सारी लड़कियां ही मासूम होती हैं? चलो यकीन कर लेते हैं कि लड़कियां मासूम होती और लड़के ही कसूरवार होते हैं लेकिन यह सवाल इस बात को निगलने नहीं देता और गले की फांस सा चुभता है कि जब लड़कियां मासूम होती है तो दहेज उत्पीड़न और नारी उत्पीड़न के अधिकतर मामलों में कसूरवार सास और ननद भी तो महिलाएं होती हैं तो यह कैसी मासूमियत कि एक महिला होते हुए भी एक महिला पर अत्याचारों का खंजर चला दिया जाता है, कभी उसे अग्निस्नान करा दिया जाता है तो कभी उसे बेघर कर दिया जाता है।

साहब ताली एक हाथ से नहीं बजती तो फिर समझौता एकतरफा क्यों? सजा एक तरफा क्यों ? एक को उसके परिजनों के हवाले सौंप दिया जाता है तो दूसरे को हवालात के हवाले यह कैसी परम्परा? कहां चले जाते हैं। इस वक्त समानता की बात करने वाले? कहाँ गुमनाम हो जाते हैं निष्पक्ष न्याय की बात करने वाले। सोचकर देखिए कितना हास्यप्रद लगता है कि घर से लेकर देश तक चलाने वाली 21 वीं सदी की महिला आज भी इतनी भोली है कि वह बहला-फुसलाकर किसी के साथ भी चलने को तैयार हो जाती है। मेरे लिए भी महिला उतनी ही सम्मानीय है जितनी आपके लिए लेकिन साहब जब बात समानता की कर रहे हैं तो उसे अमल में भी तो लाइए।

- पारसमणि अग्रवाल